सारांश

किसी भी देश का भविष्य वहाँ के बच्चों तथा युवा पीढ़ी के हाथ में होता है। जो अपने ज्ञान एवं कौशलों के माध्यम से देश के विकास में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देते हैं। जिस देश का बाल समाज जितना ही अनुशासित, क्रियाशील, स्वस्थ, शिक्षित और प्रशिक्षण युक्त होगा, उस देश का भविष्य उतना ही उज्जवल और उन्नतिशील होगा। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं जैसे- परिवार, विद्यालय एवं समुदाय इत्यादि के द्वारा उनके ज्ञान तथा कौशलों में वृद्धि होती रहती है। समाज से वंचित/उपेक्षित क्षेत्रों के बच्चों में भी इन कौशलों का विकास प्राय: देखा गया है। इन्हीं वंचित समाज में से एक सड़क के किनारे रहने वाले बच्चे हैं। जो वंचित परिवेश में विकसित होने के कारण भी समाज की मुख्यधारा में स्वयं को सम्मलित नहीं कर पाते हैं। ऐसे बच्चे गरीबी का सामना करते हुए प्रायः शहर के सड़कों के किनारे झुग्गी बनाकर रहा करते हैं। सड़क ही ऐसे बच्चों के जीविकोपार्जन का साधन भी उपलब्ध कराता है। प्रस्तुत अध्ययन में सड़क के किनारे रहने वाले बच्चों के जीवन अनुभवों के साथ उपयोग में आने वाले साधनों का, उनके जीवन को बेहतर बनाने वाले कारकों के द्वारा समाज के प्रति उनके सामाजिक संबंधों एवं दायित्वों को समझा गया है। जिसमें वाराणसी (उत्तर प्रदेश) के विभिन्न घाटों (राजेंद्र प्रसाद, अस्सी, दशाश्वमेध, ललिता घाट आदि) के साथ बेनियाबाग एवं नदेसर (पानी टंकी) स्थित कूड़ाखाना के 8-12 वर्ष आयु के बच्चों (N=63) को प्रतिभागी के रूप में चयन यादृच्छिक प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। प्राप्त परिणाम से ज्ञात होता है कि सड़क के किनारे रहने वाले बच्चे काम करने के साथ-साथ शिक्षा भी ग्रहण करते हैं। जिससे वे अन्य बच्चों से स्वयं को अलग मानते हैं। इसके साथ ही इन बच्चों के जीविका का साधन घाट पर सामान बेचना एवं कूड़ा बीनना है। इन वंचित बच्चों में समाज के प्रति सामाजिक संबंध के साथ दायित्व तथा सहयोग की भावना भी पायी जाती है। निष्कर्षतः सड़क के किनारे रहने वाले बच्चे अपने जीवन में आने वाली प्रत्येक समस्याओं का सामना करते हुए, अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए कुछ करना चाहते हैं, जिसमें स्वरोजगार, विभिन्न भाषाओं को सीखना, शिक्षा ग्रहण करना और समाजोपयोगी व्यवहार करना इत्यादि सम्मिलित है।

मुख्य शब्द: सड़क के किनारे रहने वाले बच्चे एवं जीवनानुभव

Summary

In the future of any country is in the hands of children and younger generation. Children's contribute directly or indirectly to the development of the country through their knowledge and skills. The country of which child society is active, healthy, educated and trained, the future of the country is bright and innovative. Their knowledge and skills continue to grow and enhanced by various social institutions such as schools, families, communities etc. the development of these skills has often been observed in the children of deprived and neglected areas in the society. One of these deprived societies is a child living on the road side. Due to the development in the deprived environment, they cannot join themselves in the mainstream of the society. Such children often facing poverty make slum on the side of street in the city. The road also provides the means to earn livelihood for such children. In the present study explain their social relation and liability towards the society has been understood by the means of utilizing the life experiences of the street children, this factor improves their lives. The sample selected with various ghat (Rajendra Prasad, Assi, Dashashvemegh, Lalit etc) along with Beniyabhag and Nadeshar (water tank) garbage area of Varanasi (U.P.), children (N=63) aged (8-14 years) taken as participant by random sampling methods. The obtaining result shows that the street children get education along with work. So that they believe different to other children's. The main livelihood methods of street children are selling the item and collecting rib of garbage. These deprived children also have a sense of responsibility and cooperation with social relation towards society. In conclusion, street children want to do something to improve their lives, while facing each and every problem in their life. It included self-employed, learning different languages; taking education and act as socially use full behaviour.

Key words: street children, life experiences.